Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

प्रेमचंद की कहानियों में नारी जीवन की समस्याएं और नवजागरण

डॉ. अनीता मिंज
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
दौलत राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली।

सारांश- प्रेमचंद का कथा साहित्य भारतीय जनमानस की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं पर एक व्यापक दृष्टिकोण को लेकर रचा गया है। प्रेमचंद अपनी कहानियों में समाज की मूक जनता के साथ-साथ हाशिए पर खड़ी नारी समस्याओं पर केवल चर्चा नहीं करते अपितु नारी मुक्ति की भी बात करते हैं। प्रेमचंद 'नारी अस्मिता' के लिए नारियों को स्वयं जागृत होने की सलाह देते हैं। प्रेमचंद नारी जागरण की अलख जगाने के लिए घर-घर की नारियों का आह्वान करते हैं। जिसमें कोई सामाजिक विभेद नहीं दिखाई पड़ता। वर्षों पहले अपने साहित्य द्वारा प्रेमचंद ने नारी अस्मिता और मूल्यों के लिए जो संघर्ष किया वह नवजागरण के इतिहास में बहुत बड़ा योगदान है। यही कारण है कि आज भी प्रेमचंद का 'स्त्री विमर्श' प्रासंगिक बना हुआ है।

बीज शब्द : नवजागरण, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विधवा की त्रासदी, वेश्या जीवन, नारी शिक्षा, पर्दा प्रथा, नारी और नवजागरण के प्रश्न।

प्रस्तावना- विश्व फलक पर प्रेमचंद आज भी विद्यमान हैं। भारतीय समाज के मन का लेखा-जोखा, उनकी समस्याएं, उनका निदान सभी कुछ उनके साहित्य में विद्यमान हैं। साहित्य 'समाज का दर्पण' होता है। अतः उनके साहित्य में भारतीय जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं की जितनी सटीक एवं प्रमाणिक जानकारी मिलती है उतनी शायद ही कहीं और उपलब्ध हो। उनके साहित्य में युगीन संदर्भ का सजीव चित्रण हुआ है।

प्रेमचंद का काल संक्रांति का काल था। जहां एक ओर यूरोपीय नवजागरण के फलस्वरुप भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में नई क्रांति आई तो वहीं परस्पर विरोधी तत्व भी सक्रिय हो उठे। जहां समाज में वर्षों से पीड़ित, शोषित, नारी जागरण का स्वर बुलंद हो रहा था वहीं सनातन धर्मियों का जातीय एवं धार्मिक अत्याचार जोरों पर था। देश की स्थिति डांवाडोल थी। ऐसे हालात में प्रेमचंद जैसे जागरुक एवं क्रांतिकारी लेखक की लेखनी कैसे चुप रहती ?

19 वीं सदी के अंत तक 'नवजागरण' का प्रचार-प्रसार केवल उच्च वर्ग तक सीमित था। निम्न एवं मध्यम वर्ग इससे अछूता था। फलत: समाज में नारी की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई थी। वह पोषित होकर भी शोषित थी। प्रेमचंद की जागरूक दृष्टि इस ओर गई उन्होंने महसूस किया कि संपूर्ण जागरण के बिना नवजागरण में सफलता नहीं मिल सकती। यही कारण है कि

उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समस्त वर्गों, जातियों आदि की नारियों को जागृत करने की पहल की । हालांकि नारी जागरण का काम विभिन्न समाज सुधारकों एवं तत्कालीन महापुरुषों द्वारा प्रेमचंद से पहले आरंभ हो चुका था लेकिन प्रेमचंद का नारी जागरण पूर्ववर्ती महापुरुषों के विचारों से अलग था ।

नवजागरण और नारी- भारतीय समाज में वैदिक, उपनिषद काल में नारियों को पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त था। स्त्रियों को भी 'उपनयन संस्कार' (धार्मिक कर्मकांड की दीक्षा) दिए जाते थे। लेकिन समय के साथ-साथ सामाजिक स्थितियां बदलने लगी। स्त्रियों के 'रजोधर्म' के कारण अपवित्रता का विचार कर उन्हें यज्ञ आदि पवित्र कार्यों से अलग कर दिया गया।' उपनयन संस्कार 'आदि से भी वंचित कर दिया गया। बुद्धकाल में स्त्रियां पुरुषों के साथ सम्मिलित होती थीं, किंतु रामायण, महाभारत काल तक आते-आते स्त्रियां अपने पद, प्रतिष्ठा, गौरव आदि खो चुकी थी। अब वे गृहस्थ कार्य तक ही सीमित थी । उनकी शारीरिक पवित्रता का ध्यान रखते हुए उन्हें बचपन में ही विवाह के बंधनों में बांध दिया जाता था। जिससे 'बाल विवाह' को प्रोत्साहन मिला।

कालांतर में हिंदू कर्मकांड के प्रभाव से वर्णाश्रम व्यवस्था को बढ़ावा मिला। जिससे नारी दलित की श्रेणी में आ गई । समाज को 'नारी ताड़न' का अधिकार मिल गया। नारी समाज द्वारा थोपे गए सभी मानवीय एवं अमानवीय व्यवहार को मानने के लिए मजबूर हो गईं। फिर नारी जागरण की शुरुआत कब और कहां से हुई? यह प्रश्न विचारणीय है। इतिहास में यदि झांके तो नवजागरण या पुनर्जागरण ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया है जो बहुत से देशों के इतिहास में घटित हुआ । इसमें यूरोपीय नवजागरण उल्लेखनीय है- "जब 1453 ई. में कोन्सटैंटिनोपल नगर के पतन के बाद वहां के नागरिकों ने इटली एवं आसपास के क्षेत्रों में शरण ली । इस नए संपर्क के फलस्वरूप ज्ञान- विज्ञान एवं कलाओं का यूरोप में विकास हुआ।"[1] पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं थी- "स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक व्याख्या, तर्क व बुद्धि की प्रधानता, अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं बंधनों की मुक्ति से छटपटा, अस्तित्ववादी भावना, मानववादी विचारधारा एवं स्वतंत्र चहुंमुखी विकास।"[2] उस समय चूंकि ब्रिटिश शासकों का गढ़ बंगाल था। अतः इस नई क्रांति की सुगबुगाहट भारतवर्ष पर भी दिखाई देने लगी। यहीं भारतीय एवं यूरोपीय संस्कृति की टकराहट देखने को मिलती है।

प्रेमचंद जैसे जागरुक साहित्यकार ने भी अपने साहित्य (उपन्यासों, कहानियों, लेखों, संपादकीय विचारों आदि) के द्वारा नारी को दयनीय स्थिति से उबारने का प्रयास आरंभ किया। वे तत्कालीन समाज सुधारकों से भिन्न आम नारियों की जिंदगी में झांककर उनकी समस्याओं को बहुत नजदीक से जानने समझने की कोशिश करते हैं। प्रेमचंद ने मूल्यहीन, रहस्यमयी, मनोरंजक विषयों के स्थान पर वास्तविक एवं अपने इर्द-गिर्द घटित होने वाली घटनाओं को कथा साहित्य का आधार बनाया। उनकी कहानियां 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। प्रेमचंद ने कहानियों में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं का वर्णन किया है किंतु वे सिर्फ समस्याओं का विवरण नहीं देते अपितु उसमें परिवर्तन लाना जरूरी समझते हैं।

प्रेमचंद की कथा साहित्य का मूल उद्देश्य था- 'नारी मुक्ति'। जिसका समर्थन शंभूनाथ जी ने भी किया है। वे कहते हैं कि- "प्राय: सभी उपन्यासों और कहानियों में प्रेमचंद ने समाजिक कुप्रथाओं पर चोट की और नारी मुक्ति की आवाज उठायी। वह सिर्फ सुधार में विश्वास नहीं करते बल्कि सामाजिक क्रांति भी चाहते हैं ।"[3] प्रेमचंद एक संवेदनशील लेखक थे। अतः उन्होंने

भारतीय नारियों की समस्याओं का यथार्थ वर्णन किया है। इसका विश्लेषण विभिन्न दृष्टिकोण से किया जा सकता है जिनमें प्रमुख हैं –

दहेज प्रथा- भारतीय समाज में दहेज प्रथा आज भी नारी शोषण का कारण है। प्रेमचंद युगीन समाज में भी यह प्रथा विराजमान थी यही कारण था कि लोग पुत्री के जन्म पर शोक मनाया करती थे । 'नैराश्य लीला' कहानी में इस कड़वी सच्चाई का वर्णन प्रेमचंद जी ने किया है- "आदमी अपनी स्त्री से इसलिए नाराज रहते हैं कि उसके लड़कियां क्यों होती हैं? लड़के क्यों नहीं होते?"[4] निरुपमा की केवल बेटियां होने के कारण उसे पति द्वारा प्रताड़ित होना पड़ता है । अन्ततः अत्यधिक शोक के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। 'उद्धार' कहानी में लेखक ने दिखलाया है कि दहेज की चिंता से कोई भी मां-बाप मुक्त नहीं हो सकते, इसी कारण एक परिवार में सात पुत्रों के बाद भी एक कन्या का जन्म परिवार के लिए बोझ लगता है- "दहेज के अभाव में कोई बूढ़े के गले कन्या को मढ़कर अपना गला छुड़ाता है।"[5] 'कुसुम 'कहानी का नायक अपने ससुर के पैसे से विदेश जाकर पढ़ाई करने के इरादे से शादी करता है, लेकिन उसकी यह इच्छा जब पूरी नहीं होती तब अपनी पत्नी कुसुम को त्याग देता है। दहेज के कारण परिवार की जो दुर्गति होती है इसके बारे में प्रेमचंद लिखते हैं- "जिसके घर में दो-तीन कन्याएं आ गए हैं, बस समझ लो उसका सर्वनाश हो गया । माता-पिता के लिए अब इसके सिवाय और कोई त्राण नहीं कि वे अपना पेट काटें, तन काटें, धोखाधड़ी से रुपए लावें।"[6] दहेज रुपी इस विकराल जीव का खौफ आज भी समाज में अपनी जड़े जमाएं हुए हैं, जिसका जिक्र प्रेमचंद स्त्रियों की दुर्गति के संदर्भ में करते हैं ।

अनमेल विवाह- सामाजिक दृष्टिकोण से लड़कियों का विवाह समय पर ना होना कुल के लिए घोर अपमान समझा जाता था। अतः सभी अभिभावक पुत्री का विवाह कर पितृऋण से छुटकारा पाना चाहते थे, लेकिन दहेज प्रथा एवं कभी-कभी माता-पिता के असावधानी के कारण लड़कियां अनमेल विवाह की शिकार होती थीं । बेमेल विवाह के विभिन्न रूपों को प्रेमचंद ने दर्शाया है। 'स्वर्ग का मार्ग 'कहानी में एक धनी किंतु बूढ़े व्यक्ति के साथ एक युवती का विवाह होता है । पति हमेशा पत्नी को शक की नजरों से देखता है । पत्नी भी स्वयं को एक कैदी सा महसूस करती है । उसका कहना है कि- "मैं इसे विवाह का पवित्र नाम नहीं देना चाहती । यह कारावास ही है । मैं इतनी उदार नहीं हूं कि जिसने मुझे कैद में डाल रखा है उसकी पूजा करूं।"[7] 'भूत' कहानी का पंडित सीतानाथ पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी साली बिन्नी से विवाह करता करना चाहता है। 'नया विवाह' कहानी में भी प्रौढ़ डांगामल युवती आशा से विवाह करता है। उसे आभूषणों एवं वस्त्रों द्वारा अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है, पर सफल नहीं हो पाता। अनमेल विवाह की ही परिणति है कि आशा जैसी युवती बूढ़े पति की अपेक्षा हमउम्र नौकर के प्रति आकर्षित होती है। प्रेमचंद ने यहां स्त्री मनोविज्ञान पर प्रकाश डाला है। स्त्री की कमजोरी वस्त्र, आभूषण आदि समझे जाते हैं, किन्तु आशा सच्चे प्रेम को प्राथमिकता देती है। अनमेल विवाह के विरुद्ध लड़की चाहती है कि- "बूढ़े खूसट पति की अपेक्षा जहर खाकर मरना कहीं अच्छा है क्योंकि तिल-तिल कर आजीवन मरते रहने की अपेक्षा एक दिन मर जाना ज्यादा सुखद है।"[8] प्रेमचंद के प्रगतिशील विचारों की झलक यहां दिखलाई पड़ती है। स्त्रियां अनमेल विवाह के खिलाफ अपना स्वतंत्र निर्णय लेती दिखाई पड़ती हैं।

विधवा की त्रासदी- प्रेमचंद वैधव्य को भारतीय नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं। बाल- विवाह, अनमेल विवाह आदि के कारण तत्कालीन समाज में विधवाओं की संख्या अत्याधिक हो गई थी। पुनर्विवाह न होने एवं आर्थिक परेशानियों के कारण वे बदत्तर जीवन जीने को बाध्य थीं। विधवाओं को समाज भी हेय दृष्टि से देखता था। 'नैराश्य लीला' की कैलास कुमारी 13 वर्ष की आयु में ही विधवा हो गई है। जो अपने माता-पिता के अनुसार जीवन व्यतीत करती है। फिर भी समाज उस पर कड़ी निगाह रखता है। उसे यह लगता है कि समाज क्यों नहीं समझता कि 'विधवा स्त्री 'में भी जीवन है। वह उसे जड़ समझकर अपने इशारों में चलने को क्यों मजबूर करता है? कैलास कुमारी का यह प्रश्न समाज के प्रति आक्रोश है।

प्रेमचंद ने विधवा की वास्तविक स्थिति को 'बेटों वाली विधवा 'कहानी के माध्यम से समाज के सामने रखा है, जहां फूलमती पति की मृत्यु के बाद अपने बेटों, बहुओं के द्वारा सतायी जाती है । जायदाद की बात करने पर वे कहते हैं- "कानून यही है कि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है।"[9] 'बूढ़ी काकी' कहानी की विधवा अपनी जायदाद भतीजे बुद्धिराम के नाम लिख देती है। लेकिन जायदाद पाकर बुद्धिराम और उसकी पत्नी उससे दुर्व्यवहार करने लगते हैं। 'पंच परमेश्वर' कहानी की बूढ़ी खाला की भी लगभग यही स्थिति है।

विधवा स्त्रियों की समस्या केवल सामाजिक और आर्थिक नहीं मनोवैज्ञानिक भी है। बाल विधवा होने पर उसके मन में प्रेम आकांक्षा सहज मानवीय गुण है। लेकिन समाज की मान्यताएं उसे पुनर्विवाह की आज्ञा न देकर घुट घुट कर जीने को बाध्य करती हैं। जिससे कभी-कभी विधवाएं पतित हो जाती थीं या फिर आत्महत्या कर लेती थीं। विधवा गंगी (प्रेम की होली)और मानी (धिक्कार) के मन में प्रेम की आकांक्षा जन्म लेती है। मानी का चचेरा भाई मानी की दुर्दशा देखकर उसका पुनर्विवाह करवा देता है लेकिन मानी को परिवार वालों की खरी-खोटी सुननी पड़ती है। इससे स्वयं को दोषी समझ मानी आत्महत्या कर लेती है। प्रेमचंद विधवा स्त्री की त्रासदी को देखते हुए जो समाधान करना चाहते हैं उसमें युगीन प्रभाव देखने को मिलता है। यही कारण है कि वे 'प्रेमा' उपन्यास की पूर्णा का अमृतराय से विवाह करवाते हैं लेकिन इसी कहानी पर आधारित उपन्यास 'प्रतिज्ञा' में पूर्णा का पुनर्विवाह ना करवाकर उसे वनिता आश्रम भेज देते हैं। क्योंकि विधवा विवाह प्रत्येक विधवा स्त्री का स्थायी समाधान नहीं है। 'अंतिम शांति' कहानी की विधवा गोपा एक स्वाभिमानी नारी है, जो विधवा होने के बाद भी कठिन परिस्थितियों में भी किसी की सहायता नहीं लेती। वह अपनी पुत्री को भी स्वाभिमानी बनाने की शिक्षा देती है। प्रेमचंद ने विधवा की समस्याओं का समाधान हर दृष्टिकोण से करने की कोशिश की है। अतः श्री हरि विलास शारदा द्वारा प्रस्तावित बिल "पति की संपत्ति पर पत्नी का अधिकार "इसका खुले दिल से स्वागत करते हैं प्रेमचंद जी जानते थे कि आर्थिक स्वालंबन ही स्त्री को समाज में सम्मान दिला सकता है।

वेश्या जीवन की बिडम्बना- वेश्यावृत्ति कोई भी स्त्री स्वेच्छा से नहीं अपनाती । इसके पीछे कोई ना कोई विवश करने वाली परिस्थितियां होती हैं। अनमेल विवाह, अशिक्षा, आर्थिक पराधीनता, पारिवारिक कलह, स्त्री का अपमान आदि के कारण स्त्री को मजबूरी में यह पेशा अपनाना पड़ता है। प्रेमचंद युगीन समाज में किसी कारण स्त्री एक बार घर से बाहर निकल आई तो उसके सामने दो ही विकल्प थे -पहला आत्महत्या दूसरा वेश्यावृत्ति। दो कब्रें, नरक का मार्ग, एक्ट्रेस, आगा- पीछा आदि कहानियों में स्त्रियों द्वारा वेश्या प्रथा को अपनाने की मजबूरियां दिखलाई गई है। 'नरक का मार्ग 'कहानी की नायिका बूढ़े पति

को मन से ना अपना पाने के कारण पतन की ओर जाती है। उसका कहना है "मेरे पतन का अपराध मेरे सिर नहीं मेरे माता-पिता और उस बूढ़े पर है जो मेरा स्वामी बनना चाहता है।"[10] 'निर्वासन' कहानी की मर्यादा जब मेले में भटक जाने के कारण कुछ दिनों बाद घर वापस आती है। इसपर पति उसे अपनाने से मना कर देता है। 'वेश्या 'कहानी की माधुरी (वेश्या) प्रेम के द्वंद में आत्महत्या कर लेती है। 'आगा -पीछा 'कहानी में प्रेमचंद ने वेश्या पुत्रियों की शिक्षा, विवाह तथा उनके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दर्शाया है। 'दो कब्रें' कहानी के प्रोफेसर रामेंद्र शिक्षित वेश्या पुत्री सुलोचना से विवाह तो कर लेते हैं किंतु समाज उसका बहिष्कार कर देता है। इससे स्पष्ट है कि वेश्याएं यदि सहज जीवन जीना चाहती भी हैं तो समाज उसे सहजता से स्वीकार नहीं करता।

शिक्षा नारी का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं- 19 वीं सदी के आरंभ में नवजागरण के फलस्वरूप 'स्त्री शिक्षा' को बढ़ावा मिला। प्रेमचंद ने भी नारियों के संपूर्ण विकास के लिए शिक्षा को जरूरी समझा। उनके अनुसार- "जब तक स्त्रियां शिक्षित नहीं होंगी और सब कानूनी अधिकार उनको बराबर ना मिल जाएंगे तब तक महज काम करने से काम नहीं चलेगा।"[11] लेकिन वे पाश्चात्य उच्च शिक्षा के खिलाफ थे। उनके अनुसार नारियों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वे अपने दायित्वों एवं उचित-अनुचित आदि समझ सके। इसलिए' गबन' के एडवोकेट इंद्रधनुष स्त्रियों के लिए शिक्षा अनिवार्य समझते हैं। 'गोदान' उपन्यास में भी प्रोफ़ेसर मेहता 'स्त्री शिक्षा' की उपयोगिता पर भाषण देते हैं। जो मूलतः प्रेमचंद के विचार लगते हैं।

पर्दा-प्रथा- आज नारी शिक्षा के साथ-साथ शहरों में पर्दा प्रथा प्राय: समाप्त हो चुकी है फिर भी आदर एवं संस्कारवश मध्यम वर्गीय परिवार की स्त्रियां बड़ों के सामने घूंघट डालती हैं। नवजागरण के तहत पर्दा प्रथा को स्त्री की प्रगति में अवरोध माना गया है। सन् 1927 में महारानी बड़ौदा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय नारी सम्मेलन हुआ जिसमें पर्दा प्रथा तोड़ने का आह्वान किया गया था। प्रेमचंद अपनी पत्नी शिवरानी देवी से भी कहते हैं- "मैं तुमसे कहता हूं कि पर्दा क्यों नहीं छोड़ती।"[12] कभी-कभी पर्दा-प्रथा के कारण 'दुराशा' कहानी का हाल हो सकता है। जिसमें दयाशंकर अपने मित्रों को होली के दिन घर बुलाकर भी कुछ खिला नहीं सकता क्योंकि घर में दियासलाई नहीं था और स्त्री बाहर जाकर ना तो दियासलाई खरीद सकती थी और ना ही मांग सकती थी। गांधीजी ने भी आजादी की कामयाबी के लिए स्त्रियों को पर्दे की कैद से आजाद होने की बात की।

इसके साथ ही प्रेमचंद नारी की आम समस्याओं- आभूषण प्रियता, पारिवारिक कलह, संयुक्त परिवार की समस्याएं आदि को भी अपने साहित्य के माध्यम से सुलझाने की चेष्टा करते हैं।

नारी और नवजागरण का प्रश्न- प्रेमचंद ने अपनी कथा साहित्य के माध्यम से नारी को जागरूक करने का प्रयास किया। वैसे नारी जागरण का स्वर हमें उनके उपन्यासों में भी सुनाई पड़ता है जहां सभी वर्ग की नारियां अपने- अपने कर्म क्षेत्र में जागृत दिखाई पड़ती हैं। 'सेवासदन' की सुमन वेश्या बनने के बावजूद अंत में पूरी जिंदगी सेवासदन आश्रम में रहकर वेश्याओं का उद्धार करती है। 'प्रेमाश्रम 'की बिलासी अनपढ़ ग्रामीण होकर भी निडर एवं जागरूक है। जो शोषक कारिन्दों का मुंहतोड़ जवाब देती है।' कर्मभूमि 'उपन्यास में नारी जागरण का व्यापक रूप दिखाई पड़ता है। जहां मुन्नी, सलोनी पठानिन आदि अनपढ़ होकर

भी देश के प्रति जागरूक हैं। 'गोदान 'की धनिया, मालती, सरोज, मीनाक्षी आदि सभी स्त्रियां 'नारी स्वतंत्रता' के प्रति जागरूक दिखाई पड़ती हैं।

प्रेमचंद के समय-समय पर प्रकाशित लेखों, संपादकीय आदि में भी नारी जागरण का मुखर स्वर सुनाई पड़ता है। सन् 1932 हंस पत्रिका के दिसंबर अंक में इन्होंने 'भारतीय महिलाओं की जागृति 'शीर्षक लेख में लिखा है कि- "ये सार्वजनिक निर्वाचन अधिकारी चाहती हैं। जायदाद या शिक्षा की कोई कैद उन्हें पसंद नहीं और राष्ट्रीय एकता का तो जितने जोरो से स्त्रियों ने हरेक अवसर पर समर्थन किया है उस पर बहुमत से हिंदू मुसलमान पुरुषों को लज्जित होना पड़ेगा।"[13]

प्रेमचंद की कहानियों में भी ऐसी जागरूक स्त्रियों की संख्या कम नहीं है जो सामाजिक रूढ़ियों, शोषण आदि का विरोध करती हैं। 'आहुति' कहानी की रूपमणि समाज की आर्थिक विषमता का विरोध करती है। 'कुसुम 'कहानी की कुसुम दहेज के लोभी पति का विरोध कर सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देती है। 'शांति' कहानी की सुनीता विलासी पति के साथ किसी भी कीमत में समझौता करने को तैयार नहीं होती। 'रहस्य' कहानी की मंजुला पति के अनमेल विचारों के कारण अलग रहती है। वह किसी भी नैतिक व धार्मिक बंधनों की बेड़ियों में जबरदस्ती अपने आप को बांधना नहीं चाहती।

प्रेमचंद की नारी पात्र तत्कालीन राजनीतिक आंदोलनों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। 'होली का उपहार' कहानी की नायिका सुखदा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए दुकानों में जाकर धरना देती है। 'जेल' कहानी की मृदुला, जुलूस निकालना अंग्रेजों से बराबरी का मुकाबला समझती है। 'शराब की दुकान' कहानी में मिसेज सक्सेना धैर्यपूर्वक शराब की दुकान के सामने धरना देती है। 'पत्नी से पति' कहानी की गोदावरी अपने पति की असहमति के बावजूद कांग्रेस की आम सभा में भाग लेती है। यहां प्रेमचंद ने स्त्रियों की समस्याओं को उठाया तो है ही साथ ही नारी को हर क्षेत्र में जागरूक दिखलाया है। प्रेमचंद स्त्रियों को पुरुषों की दासी नहीं अपितु सहधर्मिणी समझते थे। इसी कारण एक बार किसी जलसे से आकर वहां मिले फूलों की माला पत्नी शिवरानी देवी के गले में डालते हुए बोले- "मैं किसी बोझ को बिना तुम्हारे नहीं उठा सकता। मैं तो यहां तक समझता हूं कि कोई पुरुष बिना स्त्री के कुछ भी नहीं कर सकता। जब घर- घर की स्त्रियां और पुरुष हिंदुस्तान की तरक्की में लगेंगे तभी सब का कल्याण होगा।"[14] प्रेमचंद के ये विचार तत्कालीन समाज की नारियों को एक ऊंचाई प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष- प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य (1908-1936 ई.) द्वारा नारी की दयनीयता का चित्रण कर उन्हें इससे ऊपर उठने के लिए नई सोच एवं नई दिशा प्रदान की।प्रारंभ में लेखक ने सिर्फ नारी समस्याओं का चित्रण किया है। लेकिन धीरे धीरे नारियों का मुखर, जागरुक एवं विकासात्मक रूप दिखलाई पड़ता है। जो जरूरत पड़ने पर समाज की रूढ़ियों आडंबरों आदि का खुलकर विरोध करती हैं। सक्रिय राजनीति में भी अपना दबदबा रखती हैं। किंतु प्रेमचंद का नारी जागरण कहीं भी पाश्चात्य का अंधानुकरण नहीं करता। प्रेमचंद का उद्देश्य था नारियों की समस्याओं से परिचित कर उन्हें जागरुक एवं सचेत करना ताकि वे अपने प्रतिष्ठा की लड़ाई खुद लड़ सकें। जहां आधुनिक काल में भी नारियों को केवल अबला एवं श्रद्धा से सम्मानित कर मानवता की परिधि से ही निष्कासित कर दिया जाता है। आज भी स्त्रियां मानसिक एवं जैविक स्तर पर शोषित होती हैं। सभी अधिकारों एवं नारी समानता के बावजूद आज भी गांवों एवं शहरों में नारी संबंधी समस्याएं विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। अतः

आज से करीब 80-82 वर्ष पहले प्रेमचंद ने नारी अस्मिता एवं मूल्यों के लिए अपने साहित्य द्वारा जो संघर्ष किया वह नवजागरण के इतिहास में बड़ा योगदान है।

संदर्भ सूची

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994, पृष्ठ सं. 94
2. रामधन मीना, पुनर्जागरण के अख्याता : मैथिलीशरण गुप्त, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर, सं. 1991, पृष्ठ सं. 3
3. शंभूनाथ, प्रेमचंद का पुनर्मूल्यांकन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1988, पृष्ठ सं. 26
4. प्रेमचंद ,नारी जीवन की कहानियां प्रेम प्रकाशन मंदिर ,दिल्ली, 1987, पृष्ठ संख्या 51.
5. वही, पृष्ठ संख्या 32
6. अमृतराय, प्रेमचंद : विविध प्रसंग- भाग 2, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृष्ठ संख्या 265
7. प्रेमचंद, नारी जीवन की कहानियां, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1987, पृष्ठ संख्या 63
8. वही, पृष्ठ संख्या 63
9. वही, पृष्ठ संख्या 22
10. वही, पृष्ठ संख्या 61
11. शिवरानी देवी, प्रेमचंद- घर में, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1956, पृष्ठ संख्या 113.
12. वही, पृष्ठ संख्या 259
13. अमृतराय, प्रेमचंद: विविध प्रसंग- भाग 3, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृष्ठ सं 254
14. शिवरानी देवी, प्रेमचंद- घर में, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1956, पृष्ठ संख्या 205